ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 122-125**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

जनपद लखीमपुर में जैविक संसाधन आधारित औद्योगिक भूदृश्य : एक भौगोलिक अध्ययन

राघवेन्द्र सिंह, 2. डॉ0 ललित कुमार दूबे

शोध अध्येता, 2. असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, आर0 पी0 पी0 जी0 कॉलेज कमालगंज, फर्रुखाबाद (उ0प्र0), भारत

Received-03.09.2025, Revised-10.09.2025, Accepted-16.09.2025 **E-mail : raghuvendra7@gmail.com**

सारांशः ***कृषि जीवन निर्वाह का सबसे बड़ा माध्यम है। जिस देश की 70% जनसंख्या प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर होगी, उस देश की अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व को सहजता से समझा जा सकता है। आज भी भारत में कृषि कुल श्रमशक्ति का 67% रोजगार उपलब्ध कराती है। कृषि आधारित उद्योगों का देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे प्रमुख उद्योगों में कच्चे माल की आपूर्ति कृषि क्षेत्र से होती है। ग्रामीण औद्योगीकरण के पीछे यह विचार है कि इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे, स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति होगी, स्थानीय संसाधनों का उचित उपयोग हो सकेगा, श्रमिक बाहुल्य तकनीकि का प्रयोग होगा एवं ग्रामीण स्तर पर आय के संसाधन बढेंगे। इसके अतिरिक्त औद्योगिक विकास से कृषि के विकास की भी सम्भावनाएं उत्पन्न होंगी।***

योजना आयोग की रिपोर्ट में भी कहा गया है कि "कृषि आधारित उद्योग अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग हैं, जिनकी कभी भी उपेक्षा नहीं की जा सकती है।" वर्ष 1958 में कृषि के महत्व को कृषि प्रशासनिक समितियों ने कहा था कि "कृषि ही सभी उद्योगों की जननी है और मनुष्य को जीवन प्रदान करने वाली है।"

कुंजीभूत शब्द– **हस्तशिल्प, हथकरघा, प्राकृतिक व जैविक संसाधन, लघु एवं कुटीर उद्योग, खादी एवं ग्रामोद्योग विकास।**

प्रस्तावना – जनपद लखीमपुर एक अल्प विकसित पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। यहां पर जनपद में बृहद उद्योग स्थापित नहीं हैं। इसकी अर्थव्यवस्था कृषिगत अर्थव्यवस्था है जिस पर जनसंख्या का 80% भाग निर्भर करता है। जिससे कृषि पर जनसंख्या का भार कम करने की आवश्यकता है। कृषि पर भार कम करने हेतु कृषि औद्योगीकरण एक महत्वपूर्ण विकल्प है। सामान्यतः कृषि क्षेत्र की औद्योगिक संरचना को मध्यम व लघु उद्योगों पर आश्रित होना चाहिए जो औद्योगिक विकास की रीढ़ है, क्योंकि यह उद्योग कृषि उत्पादों व स्थानीय संसाधनों पर आधारित होते हैं। अतः यह आवश्यक है कि इस क्षेत्र में भविष्य के विकेन्द्रीकरण के आधार पर लघु, कुटीर एवं कृषि आधारित उद्योग स्थापित किए जायें ताकि ग्रामीण क्षेत्र में निवास कर रहे लोगों के जीवन स्तर में सुधार हो सके।

अध्ययन क्षेत्र – जनपद लखीमपुर का अक्षांशीय विस्तार 27 डिग्री 6 मिनट उत्तर से 28 डिग्री 6 मिनट उत्तर तथा देशांतरीय विस्तार 80 डिग्री 34 मिनट पूर्व से 81 डिग्री 30 मिनट पूर्व के मध्य है। इसका क्षेत्रफल 7680 वर्ग किलोमीटर है। लखीमपुर जनपद का आकार त्रिकोणीय है। जनपद मुख्यालय से प्रदेश की राजधानी लखनऊ 129 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में मोहन नदी स्थित है जो इस जनपद को नेपाल से अलग करती है। जबकि पूर्व में घाघरा की एक शाखा कोरियाला नदी है। अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण में सीतापुर और हरदोई तथा पश्चिम में पीलीभीत और शाहजहांपुर जनपद स्थित है। संरचनात्मक दृष्टिकोण से अध्ययन क्षेत्र जलोढ़पूरित गर्त का भाग है इसमें जलोढ़ का जमाव पाया जाता है। इस समतल मैदानी भूभाग का निर्माण घाघरा एवं राप्ती नदियों द्वारा लाये गये जलोढ़ से निर्मित हुआ है लेकिन अपक्षय एवं अपरदन के कारण यह मैदानी भाग यत्र–तत्र असमतल हो गया है। अध्ययन क्षेत्र के सम्पूर्ण भाग के उत्तर, पश्चिम एवं दक्षिण भाग में हिमालय की शिवालिक श्रेणी है जो सागर तल से 216 मीटर ऊंची है। जबकि पूर्व में निम्नतम ऊंचाई 89 मीटर है। अध्ययन क्षेत्र की औसत ऊंचाई सागर तल से 150 मीटर है। शारदा नदी की स्थिति मध्य भाग में है। यह विशिष्ट भूभाग जिसका निर्माण भावर, तराई प्राचीन एवं नवीन जलोढ़ से हुआ है। यद्यपि सम्पूर्ण भूभाग की संरचना जलोढ़ जमाव से हुई है परंतु सर्वत्र गहराई एक समान नहीं है क्योंकि विभिन्नि क्षेत्रों में जलोढ़ जमाव की परिस्थितियाँ भिन्न–भिन्न रहती हैं।

अवस्थिति मानचित्र : जनपद लखीमपुर

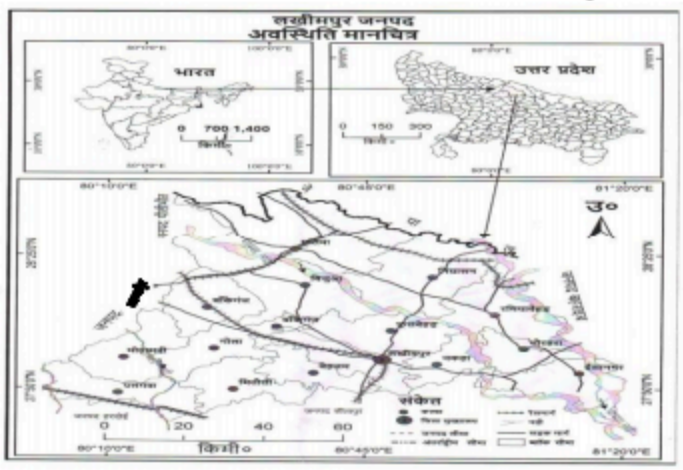

अध्ययन का उद्देश्य – प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र लखीमपुर जनपद है जिसका प्रमुख उद्देश्य कृषि आधारित उद्योगों की पहचान करना, उनकी प्रगति का आकलन करना, उद्योगों को बढ़ावा देना, कृषि आधारित अन्य उद्योगों की ओर ध्यान आकर्षित करना, लघु, कुटीर एवं अन्य उद्योगों की समस्याओं को सामने लाना एवं उनका निराकरण प्रस्तुत करना है जिसके आधार पर इस क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों का विकास सुनिश्चित किया जा सके।

अनुरूपीलेखक/संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

शोध क्रिया विधि – अध्ययन क्षेत्र में शोध पत्र के उद्देश्य एवं समस्याओं के आकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का संकलन एवं विश्लेषण किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों को अध्ययन क्षेत्र में जाकर अनसुची, साक्षात्कार एवं सर्वेक्षण के माध्यम से एकत्रित किया गया है जबकि द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग विभिन्न पत्र पत्रिकाओं, शोध पत्रों एवं सरकारी विभागों तथा कार्यालयों से एकत्रित किया गया है।

विश्लेषण – लखीमपुर जनपद, उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा जनपद है जिसमें 7 तहसीलें 15 ब्लॉक, 1797 ग्राम तथा 15 मुख्य उद्योग एवं अन्य छोटे उद्योग हैं। लखीमपुर की कुल जनसंख्या का 89ः भाग ग्रामीण है जिसका प्रमुख व्यवसाय कृषि है। क्योंकि गांव मे आय प्राप्ति एवं रोजगार का प्रमुख साधन कृषि होता है इसीलिए जनपद में कृषि आधारित उद्योगों का विकास हुआ है। जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगिक उत्पादन व्यापारिक उद्देश्य के लिए किया जाता है जिसमें फल उत्पादन, रेशम कीट पालन, मधुमक्खी पालन, पशुपालन, मत्स्य पालन, डेरी उद्योग, चीनी उद्योग, हस्तशिल्प आदि प्रमुख है। अध्ययन क्षेत्र के सभी विकास खण्डों में कृषि एवं कृषि आधारित सूक्ष्म, मध्यम एवं कुटीर उद्योगों का विकास हुआ है।

लखीमपुर जनपद की वर्तमान कृषि औद्योगिक संरचना एवं भौतिक स्थिति – लखीमपुर जनपद में कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना हेतु आधारभतू संसाधन व सुविधाएं : लखीमपुर जनपद में कृषि आधारित उद्योगों के विकास हेतु आवश्यक सुविधाएं– कृषि उद्योगों का स्थानीयकरण, मुख्य रूप से कच्चे माल की आपूर्ति, आवगमन की सुविधाएं, बाजार की निकटता, सस्ते एवं पर्याप्त संख्या में मजदूर एवं दूर संचार व बैंकिंग सुविधा जनपद में उपलब्ध है।

तालिका संख्या 1

लखीमपुर जनपद में पंजीकृत कार्यशील लघु औद्योगिक इकाईयां (2018)

क्र.सं.	उद्योग का नाम	उद्योगों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति
1	ग्रामीण उद्योग	467	4060
2	हथकरघा उद्योग	47	5564
3	हस्तशिलप उद्योग	249	
4	अन्य	653	
	योग	**1436**	**9624**

स्रोतः जिला खाद्य एवं ग्रामोद्योग लखीमपुर

तालिका संख्या 2

लखीमपुर जनपद के चयनित विकासखण्ड में ग्रामीण उद्योग के अन्तर्गत कार्यरत पंजीकृत इकाईयां (2018)

क्र.सं.	चयनित विकास खण्ड का नाम	उद्योगों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति
1	पलिया	72	543
2	विजुआ	98	830
3	मोहम्मदी	71	844
4	मितौली	99	866
5	बांकेगंज	36	324
6	नकहा	46	367
7	लखीमपुर	45	286
	योग	**467**	**4060**

स्रोत : जिला खादी एवं ग्रामोद्योग लखीमपुर

लखीमपुर जनपद में कृषि आधारित प्रमुख उद्योग – जनपद में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम स्तरीय कृषि उद्योगों का विकास हुआ है। जनपद में कुल 1436 औद्योगिक इकाईयां यहां पंजीकृत है जिनमें 9624 व्यक्ति कार्यरत हैं। हथकरघा उद्योग में 47, हस्तशिल्प में 249 एवं अन्य में 653 इकाईयां कार्यरत हैं। इन इकाईयों में 5564 व्यक्ति कार्यरत हैं जबकि ग्रामीण उद्योगों की 467 इकाईयों में 4060 व्यक्ति कार्यरत हैं। जनपद में गुलाब की खेती निघासन ब्लॉक में बृहद स्तर पर की जाती है। यह हींग एवं गुलाब की खेती के साथ–साथ, गुलाब इत्र के लिए भी विश्वविख्यात है। घी, तेल, दाल एवं आंटा, दुग्ध उद्योग, हथकरघा, रेडीमेड वस्त्र निर्माण, हैंडलूम, कॉटन, खादी एवं ग्रामीण उद्योग (वस्त्र आधारित), अचार, मुरब्बा, आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण, हस्तशिल्प उद्योग, पशुपालन एवं मत्स्य उद्योग आदि का विकास हुआ है। इन उद्योगों में 1.5 लाख व्यक्ति कार्यरत हैं। जनपद की कुल आय में 17 प्रतिशत लाभ वस्त्रों से होता है। जनपद के जैविक संसाधन आधारित औद्योगिक भूदृश्य का विवरण इस प्रकार है।

गुड़ उद्योग : अध्ययन क्षेत्र में गुड़ का उत्पादन बहुत अधिक समय से होता आ रहा है। यहाँ के गुड़ की मॉग स्थानीय एवं राज्य स्तर पर प्रसिद्व है। यहाँ लगभग गुड़ उद्योग में 200 से ज्यादा गुड़ कोल्हू इकाईयां हैं। यहाँ लगभग सभी विकासखण्डों में गुड़ का उत्पादन किया जाता है। लखीमपुर जनपद से गुड़ अन्य राज्यों में निर्यात किया जाता है।

हथकरघा उद्योग : लखीमपुर जनपद में हथकरघा उद्योग के विकास हेतु 50 सहकारी समितियों का गठन किया गया है जिनमें 2798 सदस्य हैं। इनमें 15885 लाख मीटर वस्त्र निर्माण किया जाता है। हथकरघा उद्योगों में गद्दा, गमछा, चादर, बनियान, धोती, कुर्ता, रजाईयां, दरियां आदि बनाए जाते हैं। यह औद्योगिक इकाईयां पलिया, निघासन, बिजुआ, लखीमपुर, नकहा, मितौली, पसगवां, गोला, मोहम्मदी विकासखण्ड में कार्यरत हैं। हथकरघा वस्त्र उद्योग में 47 इकाईयां कार्यरत हैं।

खादी ग्रामोद्योग : जनपद के खादी ग्रामोद्योग में 50 सहकारी समितियों का गठन किया गया है, इसमें 467 व्यक्तिगत इकाईयां कार्यरत हैं। इस क्षेत्र में अचार, मुरब्बा की बड़ी संख्या में इकाईयां कार्यरत हैं। सूती वस्त्र बुनाई एवं रेडीमेड वस्त्र निर्माण,

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

रेशमी व ऊनी वस्त्र निर्माण, कालीन, कपड़े की बैग, रस्सी बुनाई, पूजा व स्टोव की बत्तियां निर्माण, लकड़ी का फर्नीचर निर्माण, दियासलाई, हाथ से मछली मारने वाले जाल का निर्माण, गुड़िया निर्माण, आलू के चिप्स, बड़ी, पापड़ निर्माण, दाल की बारी, पापड़ निर्माण, कृषि यंत्र, मिट्टी के बर्तन निर्माण एवं चर्म शोधन (चमड़े के जूते, बेल्ट, बैग, पर्स निमार्ण) आदि की बड़े स्तर पर इकाईयां कार्यरत हैं। इनसे करोड़ों रुपयों की आय प्राप्त होती है।

हस्तशिल्प उद्योग : जनपद में इस उद्योग के अन्तर्गत 249 इकाईयां कार्यरत हैं। हस्तशिल्प उद्योग में मिट्टी के खिलौने, बर्तन, सुराही, घड़ा, सकुरा, सकोरी, कुल्हड़, कृषि उपकरण, चारपाई, जूता, दरियां, कालीन, होजरी, कंठी माला, मोमबत्ती, अगरबत्ती आदि निर्माण की इकाईयां विकासखण्ड पलिया, निघासन, बिजुआ, लखीमपुर, नकहा, ईसानगर, मितौली, पसगवां, गोला, मोहम्मदी आदि विकासखण्ड में कार्यरत हैं जिनसे लाखों रुपयों की आय प्राप्त होती है।

पशुधन आधारित उद्योग : जनपद में पशुपालन हेतु हरा चारा पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। जनपद में कुल 6.84 लाख पशु हैं। इनसे दुग्ध उत्पादन एवं टेनरी इकाईयां है। जनपद में औसत पशु मृत्यु दर 10: है। पशुओं की खाल एवं अस्थियों का उपयोग चर्म उद्योगों में हो रहा है। चर्म उद्योग अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्रों में जूता चप्पल का निर्माण तथा रिपेयरिंग की इकाइयों के रूप में कार्यरत हैं। पशुधन आधारित ऊनमील, बायोफर्टीलाइजर्स, टेनरी, लेदर फुटवियर, घड़ी के फीते, बेल्ट, पर्स, बैग, जैकेट, दुग्ध उत्पादन व गौशाला आदि की इकाईयां विकासखण्ड पलिया, निघासन, बिजुआ, लखीमपुर, ईसानगर, मितौली, पसगवां, गोला एवं मोहम्मदी आदि स्थानों पर कार्यरत हैं।

दुग्ध व्यवसाय : लखीमपुर जनपद में दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु विकासखण्ड स्तर पर अलीगढ़ मार्ग पर पंडित दीनदयाल योजना के अन्तर्गत 587 करोड़ रुपए की लागत से 80 हजार लीटर प्रतिदिन हैंडल करने वाली दुग्धशाला स्थापित है। इस डेरी की स्थापना से लखीमपुर के आसपास के नगरों से शुद्ध दुग्ध उचित मूल्य पर उपलब्ध हो रहा है। डेरी उद्योग से लगभग 8000 परिवारों को सीधे लाभ प्राप्त हो रहा है। जनपद में दुग्ध उत्पादन से शुद्ध घी, पनीर, दुग्ध पाउडर, खोवा, दही आदि प्राप्त हो रहा है। दुग्ध उत्पादन की 599 समितियां हैं। इनकी सदस्य संख्या 40537 है। जनपद में एक दुग्ध चिलिंग इकाई है। इस दुग्ध उत्पादन से 40 करोड़ रुपए की आय प्राप्त हो रही है।

मत्स्य पालन : जनपद में मछली पालन का विकास बहुत ही कम हुआ है। स्थानीय जनता में मछली पालन एवं उपयोग में रुचि बहुत कम है। मछली पालन की दृष्टि से जनपद पिछड़ा हुआ है। मछली पालन जनपद में निजी जलाशय में होता है। मछलियों की संख्या बहुत कम है।

कृषि आधारित उद्योग : जनपद में 2.08 हेक्टेयर वर्ग किमी0 क्षेत्रफल पर कृषि की जाती है। कुल फसल उत्पादन में गेहूं सर्वाधिक 48.15%, बाजार 21.65%, आलू 6.4%, सरसों 6.42%, चावल 5.03% और शेष 12.28% में जौ, अरहर, सूरजमुखी, तिल, मटर, चना, ज्वार, तम्बाकू आदि उत्पादित किए जाते हैं। इन फसलों पर आधारित छोटे बड़े उद्योग कार्यरत हैं। गेहूं के विभिन्न उत्पाद आटा, मैदा, सूजी, दलिया मिलें हैं व आटा चक्की, बिस्किट, ब्रेड, सेवइयां, रिंग निर्माण के कारखाने व फैक्ट्रियां स्थित है। यह विकासखण्ड पलिया, निघासन, बिजुआ, लखीमपुर, नकहा, ईसानगर, मितौली, पसगवां, गोला, मोहम्मदी आदि विकासखण्ड में कार्यरत हैं। चावल आधारित चावल मिलें, दाल आधारित मिलें, बेसन एवं पौष्टिक आहार, ज्वार एवं बाजार से निर्मित पशु आहार, सरसों से तेल मिलें, खली घानी तेल, अरंडी तेल, तिल का तेल, गन्ना से गुड़, चीनी, खांड़ सारी, गन्ना रस निर्माण की इकाईयां, सौफ, धनिया, मिर्च, खटाई, हल्दी आधारित मसाला पिसाई एवं पैकिंग आधारित इकाईयां, कपास से बिनौला आधारित इकाईयां पलिया, निघासन, बिजुआ, लखीमपुर, नकहा, ईसानगर, मितौली, पसगवां, मोहम्मदी, गोला आदि विकासखण्ड में कार्यरत हैं, जिससे करोड़ों रुपए की आय प्राप्त होती है।

वन आधारित उद्योग : लखीमपुर जनपद में 1274 वर्ग किलोमीटर हेक्टेयर क्षेत्रफल पर वन विस्तृत हैं। वनों में शीशम, बबूल, आम, महुआ, जामुन, बेर, कीकर, नीम, पीपल, आदि के वृक्ष बहुतायत में पाए जाते हैं। इन वनों से जलाऊ लकड़ी, गोंद निर्माण, अगरबत्ती, धूपबत्ती, कागज उद्योग, कागज के प्याले व पत्तल निर्माण, लिफाफा, कॉपी, जिल्द, साजी, तस्वीर फ्रेम एवं प्लाइवुड निर्माण आदि की इकाईयां जनपद में कार्यरत हैं। यह इकाईयां लखीमपुर जनपद के विकासखण्डों में कार्यरत है।

मधुमक्खी एवं मुर्गी पालन : जनपद में मधुपालन से शहद एवं मोंम प्राप्त होता है। मधुमक्खी पालन फूल व फल की फसल पर आधारित है। जनपद में मधुपालन व मुर्गी पालन किसान की आर्थिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है। इससे कम समय में हुए व्यापार से अधिक आय प्राप्त होती है। कुक्कुट व मुर्गी पालन का भविष्य बृहद है। जनपद में 75500 कुक्कुट हैं। मुर्गी पालन इस जनपद के लगभग सभी विकासखण्डों में होता है।

बागवानी से जुड़ा व्यवसाय : जनपद लखीमपुर में फल एवं सब्जियों के अलावा, फूलों की खेती एक अच्छा रोजगार माना जाता है। गुलाब, गेंदा, बेला, मोंगरा, रजनीगंधा एवं विभिन्न प्रकार के पौधे उगाए जाते हैं। गेंदा, बेला, गुलाब आदि की खेती बृहद स्तर पर की जाती है। जनपद के विभिन्न विकासखण्डों में माला निर्माण, इत्र निर्माण, गुलाब जल का निर्माण कर इनका उपयोग पूजन में किया जाता है।

औषधियों का निर्माण : लखीमपुर जनपद में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में अनेकों ख्याति प्राप्त वैदिक एवं औषधि निर्माण शालाएं हैं। यहां अनेक स्रोतों से दवाओं का निर्माण किया जाता है। जनपद में आयुर्वेदिक चिकित्सालय एवं औषधालय हैं जिनमें आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति से उपचार किया जाता है एवं यहां च्यवनप्राश, असम अरिष्ठ, लवण, भास्कर चूर्ण, मुरब्बा, हींग गोली सितोपलादि चूर्ण, हींग वटी, गुलाब जल, प्रसव द्राक्ष उत्सव, श्री माता रसायन, साल अरेस्ट, एलोवेरा, आयुर्वेदिक तेल, पिस्ती, शिलाजीत, अश्वगंधा एवं अन्य औषधि के पदार्थ का निर्माण बृहद स्तर पर होता है। इन औषधियों के निर्माण से लगभग 10 करोड़ रुपए की आय जनपद को प्राप्त होती है।

लखीमपुर जनपद में कृषि विकास हेतु विशेष योजनाएं – कृषि जिला उद्योग केंद्र एवं राज्य सरकार व केंद्र सरकार की नीतियों के अनुरूप विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत प्रधानमंत्री रोजगार योजना, नई औद्योगिक इकाईयों की स्थापना एवं पंजीकरण, उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम, उत्कल मेज व्यवस्था, उद्योगों की त्वरित स्वीकृत एवं उद्योग बंधु, सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना, सुनिश्चित रोजगार योजना, अंबेडकर विशेष रोजगार योजना, स्वर्ण जयंती ग्राम रोजगार योजना आदि कार्यरत हैं।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

लखीमपुर जनपद में कृषि आधारित उद्योगों की समस्याएं : कृषि आधारित उद्योगों के विकास हेतु सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं फिर भी यह उद्योग कुछ आधारभूत समस्याओं से ग्रसित है। जिसके कारण उचित प्रगति नहीं कर पा रहे हैं, जो निम्नलिखित प्रकार से हैं :

- कच्चे माल की कमी
- आधुनिकीकरण एवं नवीनीकरण की समस्या
- मिल एवं हथकरघा में समन्वय का अभाव
- पूंजी की कमी
- मशीनों के नवीनीकरण की समस्या
- श्रमिकों द्वारा हड़ताल होने की समस्या
- कर तथा शुल्कों की दरें महंगी
- उद्योग उत्पादित वस्तुओं के प्रचार प्रसार की कमी
- जिला उद्योग केन्द्रों की जटिल प्रक्रियाओं में व्यापक भ्रष्टाचार
- बडे उद्योगों से प्रतिस्पर्धा और पर्याप्त शासकीय संरक्षण का अभाव
- तकनीकि एवं प्रबंधकीय योग्यता का अभाव
- कुशल श्रमिकों का अभाव
- विपणन की कठिनाईयां
- प्रमाणिकता का आभाव

निष्कर्ष एवं सुझाव – जनपद लखीमपुर के औद्योगिक विकास हेतु निम्नांकित सुझाव हैं:

- कृषि आधारित उद्योगों हेतु समयबद्ध योजनाएं बनाकर उत्पादन बढ़ाने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- उद्योगों की समस्याओं का गहन सर्वेक्षण कर निदान करने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- कृषि उत्पादों पर कर कम किया जाना चाहिए जिससे कृषि उद्योग पर आधारित उत्पादित वस्तुओं का उत्पादन करने में प्रोत्साहन मिले।
- श्रमिकों की हड़ताल का निदान शीघ्र किया जाना चाहिए।
- उद्योगों में लगी पुरानी मशीनों के स्थान पर नई मशीनों का उपयोग किया जाना चाहिए।
- आधुनिक मशीनों का आयात एवं उच्च तकनीकि का प्रयोग होना चाहिए।
- शक्ति के साधनों का विस्तार कर नवीन इकाईयों की स्थापना की जानी चाहिए।
- व्यापारिक कृषि उत्पादन फसलों में वृद्धि हेतु प्रयास किया जाना चाहिए।
- किसान द्वारा सस्ती दरों पर कच्चे माल की आपूर्ति बाजार के स्थिर मूल्य को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।
- लघु एवं मध्यम उद्योगों में लाइसेंसिंग प्रणाली को सामान्य करने से उद्योगों के विकास में सहयोग मिलेगा।
- औद्योगिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए।

सदर्न्भ ग्रन्थ सूची

1. Singh. R. L. (1957) : The Saryupar Plain- A Study in Agro Industrial Relationship, National Geographical Journal of India, Vol-3.
2. Bansal, P. C. (1997) : Agricultural Problems of India, Vikas Publishing House, New Delhi.
3. Dandekar, H. and other (1979) : Role of Rural Industries in Rural Development in Misra, R.P.Tech.
4. Rohdinelli, D. A. (1979) : Small Industries in Rural Development Assessment and Perspection, Productivity XIX (Page-57-59).
5. Shivaramar, B. (1979) : Role of Rural and Small Industries, Productivity XIX(4) Page No- 441-466.
6. K. Chakraborty (1974) : A Study of The Cotton Textile Industries in West Bengal in context Geographical Review of India. Vol-36.
7. Census Report of Lakhimpur District (2011).
8. जिला आर्थिकी सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद लखीमपुर (2018).
9. सामाजिक आर्थिक समीक्षा, जनपद लखीमपुर (2018).
10. जिला खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग, लखीमपुर।
11. योजना पत्रिका, अगस्त (2021).

*****